तीन अंगों का लोप हो तो उसे लुप्तोपमा कहते हैं।
लुप्तोपमा के भी चार भेद हैं—

(क) उपमेय लुप्ता :→ जहाँ उपमेय को छोड़कर उपमा के शेष तीनों अंगों का कथन हो। उदाहरण—

"चंचल है ज्यों मीन,
अरुनारे पंकज सरिस।
निरखि न होय अधीन,
ऐसो नर-नागर कवन॥"

पहली पंक्ति में 'मीन' उपमान, 'चंचल' साधर्म्य और 'ज्यों' वाचक शब्द है। इस पंक्ति में उपमेय 'नेत्र' का कथन नहीं है पर अनायास ही उसका आक्षेप हो जाता है।

(ख) उपमान लुप्ता :→ जहाँ उपमा के चारों अंगों में केवल उपमान का लोप हो। उदाहरण—

"तीन लोक झाँकी, ऐसी दूसरी न झाँकी, जैसी झाँकी हम झाँकी, बाँकी जुगल किसोर की।।"

(इसमें 'ऐसी' वाचक है, 'बाँकी' - साधर्म्य है)

(ग) साधर्म्य लुप्ता :→ जहाँ साधर्म्य को छोड़कर शेष अंग वर्त्तमान हों। उदाहरण—

"कुंद इंदु समदेह, उमा-रमन करुनाअयन।

(सम - वाचक, उपमान - कुंद व इंदु, उमा-रमण = शंकर, साधारण धर्म गौर वर्ण का लोप है।)

(घ) वाचक लुप्ता :→ जहाँ वाचक शब्द लुप्त हो। जैसे

"सरद बिमल बिधु बदन सुहावन।"

(बिधु - चंद्रमा, बदन - मुख, धर्म - सुहावन)

यहाँ पर वाचक शब्द का लोप है।

कहीं - कहीं उपमेय और उपमान होते हैं पर साधारण धर्म और वाचक का लोप होता है। कहीं उपमेय और वाचक होते हैं पर धर्म और उपमान का कथन नहीं होता है। किसी वाक्य में उपमान और वाचक होते हैं, लेकिन उपमेय और धर्म लुप्त होते हैं। कहीं उपमेय और साधारण धर्म होते हैं पर उपमान और वाचक का लोप होता है। कहीं वाचक और उपमेय का लोप होता है। कहीं - कहीं पर एक उपमेय होता है लेकिन शेष तीनों का लोप होता है।

(iii) **मालोपमा :→**

जहाँ एक उपमेय के लिए अनेक उपमानों की योजना होती है वहाँ मालोपमा अलंकार होता है। उदाहरण -

"सिंहनी - सी काननों में, योगिनी - सी शैलों में,
मछली शफरी - सी जल में, विहंगिनी - सी व्योम में,
जाती अभी और उन्हें खोजकर लाती मैं।"

— ('यशोधरा')

(iv) **रसनोपमा :→**

यदि उत्तरोत्तर उपमेय उपमा बनता चले तो रसनोपमा अलंकार होता है। उदाह
"मुकुर सम बिधु, बिधु सरिस मुख, मुख समान सरो

(v) अनन्वय :→

एक ही वस्तु को उपमेय और उपमान दोनों कहना अनन्वय अलंकार कहलाता है। जैसे - "राम से राम, सिया सी सिया।"

(vi) उपमेयोपमा :→

उपमेय और उपमान को परस्पर एक - दूसरे का उपमान और उपमेय कहना उपमेयोपमा अलंकार है। उदाहरण - "तो मुख सो ससि सोहत है, अरु सोहत है ससि सो मुख तेरो।"

* रूपक अलंकार :→ (07), (05), (03), (01)

"प्रस्तुतेऽप्रस्तुतारोपो रूपकं निरपह्नवे।"

जहाँ प्रस्तुत (उपमेय) में अप्रस्तुत (उपमान) का निषेधरहित आरोप या अभेद स्थापन किया जाए वहाँ रूपक अलंकार होता है। रूपक का अर्थ है रूप ग्रहण करना या आरोप करना। अतः इस अलंकार में प्रस्तुत पर अप्रस्तुत के रूप का आरोप होता है। आरोप का अर्थ है एक वस्तु के साथ दूसरी वस्तु को इस प्रकार रखना कि दोनों अभिन्न मालूम हों - दोनों का अंतर दिखाई न पड़े अर्थात् दोनों को सर्वथा एक कर दिया जाता है। उपमा में उपमेय और उपमान में समानता रहती है, जबकि रूपक अलंकार में दोनों को एकरूप मान लिया जाता है। जैसे -

"चरणकमल बन्दहुं हरिराई।"

रूपक के मुख्यतः तीन भेद स्वीकार किये गए हैं —

(i) सांग रूपक :→

जहाँ उपमान का उपमेय में अंगों सहित आरोप किया जाता है वहाँ सांग रूपक होता है। उदाहरण —

"बीती विभावरी जाग री !
अंबर पनघट में डुबो रही, ताराघट ऊषा नागरी।"

(ii) निरंग रूपक :→

जहाँ अंगों के बिना उपमान का उपमेय में आरोप हो, वहाँ निरंग रूपक होता है। उदाहरण —

"श्री गुरु - पद नख मनि गन ज्योति।"

(iii) परंपरित रूपक :→

जहाँ एक आरोप दूसरे आरोप का कारण हो वहाँ परंपरित रूपक होता है।

उदाहरण —

(आँख)
"दो आँसू - तारक चख - नभ से अकस्मात् ही टूट पड़े
— ('नूरजहाँ' महाकाव्य

* उत्प्रेक्षा अलंकार :→ (07), (05), (03), (02), (01)

"भवेत् सम्भावनोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य परात्मना।"

जहाँ उपमेय में उपमान की संभावना की जाए वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। इस अलंकार में उपमेय तथा उपमान की भिन्नता

प्रकट रहती है, किन्तु समानता में निश्चयात्मकता का अभाव रहता है। उत्प्रेक्षा अलंकार के वाचक शब्दों में मानो, जानो आदि शब्द आते हैं। जैसे –

"सोहत ओढ़े पीतपट, श्याम सलौने गात।
मनो नीलमणि सैल पर, आतप पर्‌यो प्रभात॥"
– (बिहारी)

"जान पड़ता नेत्र देख बड़े – बड़े,
हीरकों में गोल नीलम हैं जड़े।" – ('साकेत')

उत्प्रेक्षा अलंकार के तीन भेद हैं –

(i) वस्तूत्प्रेक्षा :→

वस्तूत्प्रेक्षा वहाँ होती है जहाँ एक वस्तु में दूसरी वस्तु की संभावना होती है।
उदाहरण –

"नील परिधान बीच सुकुमार,
खुल रहा मृदुल अधखुला अंग;
खिला हो ज्यों बिजली का फूल,
मेघ वन बीच गुलाबी रंग।" – ('कामायनी')

(ii) हेतूत्प्रेक्षा :→

जो हेतु नहीं है उसे हेतु मानकर संभावना करना हेतूत्प्रेक्षा अलंकार होता है।
उदाहरण –

"मनो कठिन आँगन चली तातै राते पाय।"

इस पंक्ति में ये कहा गया है कि आँगन की कठोरता के कारण नायिका के

पैर लाल हो गए हैं, जबकि वे स्वभावतः लाल हैं।

(iii) फलोत्प्रेक्षा :→

फलोत्प्रेक्षा वहाँ होता है जहाँ जो फूल नहीं है उसमें फल की संभावना की जाती है। उदाहरण –

"नाना सरोवर खिले नौ पंकजों को,
ले अंक में विहँसते मन मोहते थे।
मानो पसार अपने शतशः करों को,
वे माँगते शरद से सुविभूतियाँ थे।" – (प्रिय-प्रवास)

* भ्रांतिमान अलंकार :→ (06), (04), (02), (01)
(संदेह अलंकार)

"सादृश्याद् वस्त्वन्तर प्रतीतिः भ्रांतिमान्।"

जहाँ रूप, रंग और कर्म के सादृश्य के कारण एक वस्तु को दूसरी वस्तु मान लेना भ्रांतिमान है। 'भ्रांति' का अर्थ होता है – धोखा, इसलिए भ्रांतिमान का अर्थ है धोखे से युक्त ज्ञान। यह भ्रांति सदैव चमत्कारपूर्ण होती है अर्थात् वास्तविक न होकर कवि-कल्पना-प्रसूत होती है। उदाहरण –

(i) "नाक का मोती अधर की कांति से,
बीज दाड़िम का समझकर भ्रांति से।
देख उसको ही (देखकर सहसा) हुआ शुक मौन है,
सोचता है अन्य शुक यह कौन है।" – ('साकेत')

यहाँ घर के पाले हुए शुक (तोता) को उर्मिला की नाक और मोती में अनार